प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फसलों में जैविक एवं अजैविक स्ट्रेस प्रबन्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ

पंतनगर। १४ फरवरी २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित ३४वें २१-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'फसलों में जैविक एवं अजैविक स्ट्रेस प्रबन्धन हेतु उपयुक्त पारम्परिक एवं जैव प्रौद्योगिकी दृष्टिकोण' का उदघाटन कुलपति, डा. जे. कुमार द्वारा किया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में डा. कुमार ने कहा कि वैश्विक स्तर पर बढ़ती हुई जनसंख्या के आंकड़े बताते हैं कि अगले ३० वर्षों में खाद्य उत्पादों की मांग को पूरा करने के लिए कृषि पारिस्थितिकी तथा पौधों के रोगों को भली-भांति समझना होगा। उचित फसल प्रबन्धन हेतु उपयुक्त पारम्परिक एवं जैव प्रौद्योगिकी का समावेश कर रोगों की सही पहचान एवं प्रबन्धन द्वारा लगभग ४० प्रतिशत तक हो रहे फसल नुकसान को बचाया जा सकता है जिससे कि वर्तमान में हो रहे रसायनों के प्रयोग को कम किया जा सकता है। प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए डा. कुमार ने कहा कि विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से कार्य करें। विभागाध्यक्ष एवं निदेशक, उच्च संकाय प्रशिक्षण केन्द्र, डा. करूणा विशुनावत ने प्रशिक्षणार्थियों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं विभाग की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को अवगत कराते हुए विभाग के स्वर्णिम इतिहास में पूर्व वैज्ञानिकों डा. वाई.एल. नैने एवं आर.एस. सिंह के योगदान के बारे में बताया। डा. विशुनावत ने कहा कि बदलते परिवेश में रोगों की तीव्रता भी बदलती जा रही है जिसकी वजह से रोग कारकों की पहचान एवं प्रबन्धन तकनीकियों की बेहतर जानकारी आवश्यक है। कार्यवाहक अधिष्ठाता कृषि, डा. एच.एस. चावला ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के ११ राज्यों से २१ प्रशिक्षणार्थी प्रतिभाग कर रहे हैं। कार्यक्रम में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं पादप रोग विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम समन्वयक प्राध्यापक, डा. के.पी. सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्राध्यापक, डा. मंजू शर्मा ने किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते कुलपति, डा. जे. कुमार।